Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (First Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNG 102

Paper Title: हिन्दी साहित्य का परिचय 2

Unit: I

Module Name: राजेश जोशी द्वारा रचित कविता 'बीसवीं सदी के अंतिम दिनों का एक आश्चर्य'

Module No: 05

Name of the Presenter: Ms. Anjeeta Velip

Notes

कवि राजेश जोशी का जीवन परिचय

कवि राजेश जोशी का जन्म 18 जुलाई 1946, नरसिंहगढ़ मध्य प्रदेश में हुआ। इनके पिता का नाम ईश नारायण जोशी और माता कमला जोशी है। इन्होंने M.SC की है जीवविज्ञान से और M.A किया है समाजशास्त्र से। इनकी जो प्रमुख भाषा रही है वह है हिन्दी भाषा रही है। इन्होंने कम रचनाएँ लिखी है परंतु पुरस्कार इन्हें महत्वपूर्ण मिले है इनको 2002 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया हैं, इनकी रचना 'दो पंक्तियों के बीच' इसके अलावा इन्हें स्मृति सम्मान, शमशेर पुरस्कार, पहल सम्मान, मध्य प्रदेश सरकार का शिखर सम्मान, माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार और मुक्तिबोध सम्मान से भी नवाजा गया है।

इनके दो कहानी संग्रह बड़े महत्वपूर्ण है – सोमवार और अन्य कहानी और कपिल का पेड़ ये कहानियाँ बहुत ही महत्वपूर्ण है। इनकी कविता संग्रहों में मुख्य जो रचनाएँ है 'एक दिन बोलेंगे पेड़', मिट्टी का चेहरा', 'नेपथ्य में हंसी', 'दो पंक्तियों के बीच', 'चाँद की वर्तनी धूप घड़ी' है। इनके तीन नाटक है 'जादू जंगल', 'अच्छे आदमी' और तीसरा है 'टंकारा का गाना'। इनके दो आलोचनात्मक ग्रंथ भी है- 'एक कवि की नोटबुक' और 'एक कवि की दूसरी नोटबुक: समकालीनता और साहित्य'

कविता का सार

'बीसवीं सदी के अंतिम दिनों का एक आश्चर्य' दो पंक्तियों के बीच काव्य संकलन की कविता है। इस काव्य संकलन में कवि की यथार्थवादी दृष्टि बहुत पारदर्शी होकर अपने समय के असंख्य संकटों की अभिव्यक्ति होती है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में बाजारवाद का जो हमला हुआ है उसका असर वर्तमान जीवन में देखा जा सकता है। हमारे समाज में मौजूद बहुत से अच्छे संस्कार लुप्त होते जा रहे है। एक दूसरे का दर्द जानने का और परस्पर सहानुभूति प्रकट करने के लिए लोगों के पास आज समय नहीं है। कवि इस सच्चाई को दिखाना चाहते है कि यदि हम समाज को बिखराव से बचाना चाहते है तो रिश्ते निभाने होंगे। अटूट रिश्तों से ही हमारी संस्कृति की रक्षा हो सकती है। खासकर पारिवारिक संबंधों में दरार पड़ रही है। इस कारण कवि को पारिवारिक संबंधों की आत्मीयता और बुजुर्गों के प्रति आदर सम्मान बहुत महत्वपूर्ण लगता है। हम जानते है कि बीसवीं सदी में बाजारवाद के आगमन से मानव मूल्य एकदम घट गया और सब वस्तु उपयोग के बाद फेंकने की प्रथा जारी हो गई है। इस यूज़ एंड थ्रो संस्कार ने माता-पिता और बुजुर्गों के प्रति भी यही दृष्टिकोण भरतना सिखाया है।

इस कविता में कवि ने एक ऐसे आदमी का वर्णन किया है जिसकी उम्र अस्सी पार कर चुकी थी, जिसकी कोई जमीन जायदाद भी नहीं थी। बाजारवाद के प्रभाव में आज ऐसे लोगों का कोई महत्व नहीं रहा। यहाँ तक की घर में उनका जीना दुर्भर हो गया है। दिनों दिन वृद्धाश्रमों की वृद्धि होती जा रही है। ऐसी हालात में एक आदमी जिसकी उम्र अस्सी पार हो चुकी थी। जिसकी कोई जमीन जायदाद भी नहीं थी। एक महानगर में गया जहां उसके कुछ रिश्तेदार और मित्र रहते थे।

वो पहले भी इस महानगर में आता-जाता रहता था। जब उसके बड़े भाई जीवित थे। दुर्भाग्यवश तीन बरस पहले उसके भाई का देहांत हो गया और उसका वहाँ जाना भी बंद हो गया। आज तीन सालों बाद पहली बार सकुचाता हुआ वो अपने भतीजे के पास जाता है। भतीजे और उसकी बीवी ने उनका स्वागत सत्कार वैसे ही किया जैसे पहले भाई के जीवित रहते समय किया। यह कवि को वाकई में एक अद्भुत घटना लगती है क्योंकि इस जमाने में धन-दौलत के बिना व्यक्ति का कोई महत्व नहीं रह गया है। व्यस्त जीवन में रिश्ते, नाते और बंधुजनों के प्रति समय निकालना उनके लिए दूभर हो गया है।

इस प्रकार तीन-चार दिन उस बूढ़े ने अपने भतीजे के साथ बड़े मौज से दिन गुजारे और इसी बीच उनकी भांजी का फोन आता है जो इसी शहर में रहती थी। उसने कहा तीन दिन से आप अपने भतीजे के साथ रह रहे है। आप हमारे घर कब आओगे? इतना ही नहीं उसने यह भी सूचित किया कि जितने दिन आप अपने भतीजे के साथ रह चुके है कम से कम उतने ही दिन हमारे साथ भी रहना होगा। यह फोन कॉल बीसवीं सदी के अंतिम दिनों में आयी है। जो

वाकई में हमें आश्चर्य करनेवाली है। आज किसी के पास किसी के बारे में सोचने या सुनने का वक्त नहीं रह गया है। इस माहौल में उन्हें यह कॉल प्राप्त हुआ है।

इतना ही नहीं एक दिन अचानक उनके चचेरे भाई का फोन आया। वे तो यहाँ तक पूछ बैठे कि क्या तुम आजीवन मुझे अपना सौतेला भाई ही समझोगे? जब भैया थे तब मेरी एक ना चली तुम भैया के ही घर ठहरे लेकिन आज भैया के चले जाने पर भी वहीं ठहरे हो। इतना ही नहीं उन्होंने तो यह धमकी भी दी कि यदि तत्काल तुम मेरे यहाँ ना आए तो मैं तुम्हारा अपहरण कर लूँगा। यह सब बीसवीं सदी के अंतिम दिनों में हो रहा था। आज भी नाते-रिश्ते को महत्व देनेवाले जीवित है।

कुछ दिनों पश्चात्य उन्हें एक मित्र ने जी भरकर गालियाँ देते हुये फोन किया वो भी उस बूढ़े को अपने घर ले जाना चाहता था। सबके प्रेम व्यवहार को देख बुढ़े का मन ही मन अति प्रसन्नता के कारण भी भीग गया और अति गुदगुदा उठा। अभी सब कुछ नष्ट नहीं हुआ है। वो अकेले बैठकर खुशी के अश्रु कण बहाना चाहता था। उन्हें अपने नाते-रिश्ते के लोगों की आत्मीयता देख अपने बचपन के दिन और बचपन की शरारतों की याद आ गई।

इस कविता के द्वारा कवि ने हमें बहुत कुछ सोचने के लिए विवश कर दिया है। हमारी संस्कृति और हमारा संस्कार अति मजबूत है। वो आज भी हमारे भीतर समाहित है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर या व्यस्त जीवन से गुजरते हुए भी आज भी हमारी संस्कृति के चिरंतर मूल्यों का महत्व कायम है। जिसे जगाना अति आवश्यक है, कारण पारिवारिक परिवेश में पारिवारिक संबंधों में बिखराव आने का अर्थ है समाज की खुशहाली का समाप्त होना।

उद्देश्य

आधुनिकता का समावेश तो हुआ है परंतु आज भी संवेदनात्मक स्तर पर हम अपनी जड़ों से अलग नहीं हुए है। इस कविता में कवि ने इन्हीं बातों को उल्लेखित किया है। कवि इस सच्चाई को दिखाना चाहते है कि यदि हम समाज को बिखराव से बचाना चाहते है तो रिश्ते निभाने होंगे।

भाषा शैली

कविता में कथ्य को राजेश जोशी ने बड़े सहज, सरल और सांकेतिक भाषा में पिरोया है। कविता को पढ़ते हुए पाठक को कहीं से भी संप्रेषणीयता की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। कवि ने एक महानगरीय अनुभूति को भाषा को एक पारदर्शी काँच की तरह इस्तेमाल करते हुए पाठकों के सामने रखा है।

शीर्षक

यह कविता एक कहानी के माध्यम से कवि ने कही है। कविता में जो बाते कवि ने कहीं है वह सचमुच वर्तमान दौर में आश्चर्य को प्रकट करती है। जिसके कारण कविता के शीर्षक में सार्थकता नजर आती है।